मुळा एज्युकेशन सोसायटी

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई

हिंदी विभाग

आयोजित

हिंदी पखवडा समापन समारोह

दिनांक 28 सिंतबर 2017 को महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी दिन के अवसर पर मनाये गए हिंदी पखवडे के समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन के प्रमुख अतिथी के रूप में कला संकाय प्रमुख डॉ.मच्छिंद्र वर्पे थे। कार्यक्रम में प्रमुख उपस्थिति के रूप में महाविद्यालय के राज्यशास्त्र विभाग के प्रमुख डॉ.अविनाश साळवे थे।

हिंदी पखवडे समापन समारोह के इस अवसर पर हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. श्वेता चौधारे जी ने कार्यक्रम का प्रास्ताविक करते हुए इस पखवडे के दौरान हिंदी विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी संक्षिप्त रूप मे दी। साथ ही विद्यार्थियों के सहयोग के लिए उनका अभिनंदन किया। विभाग के अध्यापक श्री. धनेश माने जी ने हिंदी दिन के उपलक्ष्य में विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के संदर्भों में अपने अनुभवों को व्यक्त किया। तत्पश्चात डॉ. चौधारे जी ने आयोजित निबंध एवं काव्यवाचन प्रतियोगिताओं के नतीजों को जाहीर किया। इसमें -

निबंध प्रतियोगिता के विजेता -

कु.फलके स्वाती नामदेव (S.Y.B.A.) प्रथम क्रमांक

कु. होळकर प्राजक्ता यशवंत (S.Y.B.A.)द्वितीय क्रमांक

कु.हापसे धनश्री भास्कर (F.Y.B.A.) तृतीय क्रमांक

कु. उरे जयश्री शिवाजी(F.Y.B.A.) उत्तेजनार्थ

काव्यवाचन प्रतियोगिता के विजेता -

कु.शेख अर्सिया नासीर(S.Y.B.A.) प्रथम क्रमांक

कु.फलके स्वाती नामदेव (S.Y.B.A.).द्वितीय क्रमांक

कु.बर्डे ज्योती देविदास (F.Y.B.A.) तृतीय क्रमांक

श्री. सय्यद साजिक दिलावर (F.Y.B.A.)उत्तेजनार्थ

प्रमुख उपस्थिति के रूप में कार्यक्रम में आए डॉ. अविनाश साळवे, जिन्हें लखीमपुर,खीरी की संस्थान द्वारा शिक्षकरत्न पुरस्कार प्राप्त हुआ, उन्होंने अपने उत्तर प्रदेश में भाषा संबंधी अनुभवों का कथन करते हुए कहा कि भाषा संवाद का माध्यम होती है और की बेहतरीन तयारी साहित्य वाचन से होती है। उनके अनुसार विद्यार्थी दशा ज्ञान प्राप्ति के लिए अत्यंत अनुकूल होती है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वाहन किया की भाषा ज्ञान का जितना भंडार भर सकते हो, भर लो। कार्यक्रम के प्रमुख अतिथी डॉ. वर्पे जी ने भाषा के व्याकरण अध्ययन पर ज्यादा जोर दिया। उनके अनुसार व्याकरण हर भाषा की आत्मा होती है, अत: भाषा के विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह पहले व्याकरण को आत्मसात करें। व्याकरण की ओर हो रहे दुर्लक्ष को उन्होंने चिंतनीय कहा। जिसके फलस्वरूप आज डिग्री तो मिल रही है, पर ज्ञान नहीं। उन्होंने विद्यार्थी से निवेदन किया कि विद्यार्थी दशा में ही चूक क्षम्य होती है, उसे सुधारने का मौका मिलता है। ऐसे में सिखते समय जादा से जादा बोलने का प्रयास करों। अन्यथा वर्तमान की तरह आगे भी शिक्षा व्यवस्था का दर्जा घटता जाएगा।

इस कार्यक्रम का सूत्रसंचालन द्वितीय वर्ष कला शाखा की छात्रा कु. प्राजक्ता होळकर ने किया। तो आभार ज्ञापन प्रथम वर्ष कला शाखा की कु. जयश्री उरे ने किया। कार्यक्रम के लिए विभाग के अध्यापक प्रा. ए .एम . दहातोंडे और प्रा. डी.एम .माने जी एवं विभाग के छात्रों का सहयोग प्राप्त हुआ।

कुछ क्षणचित्र